भिण्डी की खेती

भिण्डी के फलों का प्रयोग सब्जी के रूप में किया जाता है। इसमें विटामिन, खनिज लवण एवं आयोडिन पाया जाता है। इसकी जड़ों व तनों का उपयोग गुड़ व खांड को साफ करने में किया जाता है। फलों एवं रेशेदार डंठलों का उपयोग कागज व कपड़ा उद्योग में भी किया जाता है।

जलवायु :-

भिण्डी को उगाने के लिए लम्बे समय तक गर्म मौसम की आवश्यकता पड़ती है। इसके अच्छे अंकुरण के लिए तापमान 20 डिग्री सेन्टीग्रेड से अधिक होना चाहिये। जब दिन का तापमान 42 डिग्री सेन्टीग्रेड से अधिक हो जाता है, तो फूल झड़कर गिरने लगते है।

भूमि एवं उसकी तैयारी :-

भिण्डी की अच्छी फसल के लिये भुरभुरी दोमट मिट्टी जिसमें खाद एवं कार्बनिक तत्वों की भरपूर मात्रा हो तथा पानी का निकास अच्छा हो उपयुक्त होती है।

खेत को तीन चार बार जोत कर उसमें पाटा चलाकर समतल कर लिया जाता है। सिंचाई की सुविधा के अनुसार खेत को (विशेषकर गर्मियों में) उचित आकार की क्यारियों में बांट लिया जाता है।

उपयुक्त किस्में :-

1. अपराजिता - इसके पौधों की ऊंचाई 35–40 सेमी,फलों की लम्बाई 15–18 सेमी, गहरे हरे होते है। औसत उपज 125 क्विंटल प्रति हैक्टेयर होती है।

2. शक्ति - इसके पौधों की ऊंचाई 30–35 से.मी., फलों की लम्बाई 12–15 से.मी. होती है। फलों की तुड़ाई बुवाई के 45–50 दिन बाद शुरू हो जाती है। औसत उपज 120 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है।

खाद एवं उर्वरक :-

खेत तैयार करते समय अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद 120 से 200 क्विंटल प्रति हैक्टेयर की दर से भूमि में मिला देवें। इसके अलावा 30 किलो नत्रजन, 30 किलो फॉस्फोरस तथा 30 किलों पोटाश बुवाई के पूर्व प्रति हैक्टेयर की दर से देवें। 30 किलो नत्रजन, बुवाई के एक माह बाद खड़ी फसल में देवें।

बीज एवं बुवाई :-

गर्मी की फसल के लिये 20 किलोग्राम तथा वर्षा के लिये 12 किलोग्राम

बीज की प्रति हैक्टेयर आवश्यकता होती है। एक ग्राम कार्बेण्डाजिम एवं 3 ग्राम थाईरम प्रति किलो बीज की दर से बीजोपचार करें।

ग्रीष्म ऋतु में इसकी बुवाई फरवरी–मार्च तथा वर्षा ऋतु की जून–जुलाई में करनी चाहिये। गर्मी की फसल के लिये बीजों को 24 घण्टे पानी में भिगोने के बाद बुवाई करें। इससे अंकुरण जल्दी एवं अच्छा होता है। गर्मी में कतार से कतार की दूरी 30 सेन्टीमीटर तथा पौधे से पौधे की दूरी 12–15 से.मी. तथा वर्षा ऋतु में कतारों के बीच की दूरी 45–60 से.मी. व पौधे से पौधे की दूरी 30–45 से.मी रखनी चाहिए।

सिंचाई तथा निराई-गुड़ाई :-

गर्मियों में 5 से 6 दिन के अन्तर पर सिंचाई करनी चाहिये। वर्षा ऋतु में जब कभी आवश्यकता हो सिंचाई करें। क्यारियों में गुड़ाई करें, जिससे खरपतवार नहीं पनपे।

प्रमुख कीट

हरा तेला, मोयला एवं सफेद मक्खी :-

ये कीट पौधों की पत्तियों एवं कोमल शाखाओं से रस चूसकर पौधों को कमजोर कर देते हैं। इससे उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। ये कीट व्याधियों को फैलाने में भी सहायक होते हैं।

नियन्त्रण हेतु डाईमिथोएट 30 ई.सी. या मिथाइल डिमेटॉन 25 ई.सी. या मैलाथियॉन 50 ई.सी. का एक मिलीलीटर प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

फली छेदक :-

इस कीट की लटें काफी हानि पहुंचाती है, ये फलों में छेद करके अन्दर घुस जाती है तथा अन्दर से खाकर नुकसान पहुंचाती है, जिससे फलों की विपणन गुणवत्ता कम हो जाती है।

कीट से बचाव के लिये फूल आने के तुरन्त बाद क्यूनालफॉस 25 ई.सी., 2.0 मिलीलीटर या फेनवेलरेट 20 ई.सी. या साइपरमेथ्रिन 25 ई.सी. आधा मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के हिसाब से छिड़काव करें। आवश्यकतानुसार इसे 10 से 15 दिन के अन्तर से दोहरावें, रसायन छिड़काव एवं फल तोड़ने में कम से कम 5 से 7 दिन का अन्तर रखें अथवा प्रथम छिड़काव क्यूनालफॉस 25 ई. सी. 1000 मिली प्रति हैक्टेयर की दर से व दूसरा छिड़काव बेसिलय थुरिन्जेन्सिस कस्टकी (बीटी के) के साथ मिथाईल 40 एस.पी. (1000 मिली + 625 ग्राम प्रति हैक्टेयर) फूल आने पर व तीसरा छिड़काव 15 दिन के अन्तराल पर दूसरे

छिड़काव वाली दवाईयों को दोहराकर करें।

मूल-ग्रन्थि सूत्र कृमि

इसके प्रकोप से पौधे की जड़ों में गांठे बन जाती हैं। पौधे पीले पड़ जाते हैं, तथा उनकी बढ़वार रूक जाती है। नियन्त्रण हेतु बुवाई से पूर्व 25 किलो कार्बोफ्यूरॉन 3 जी प्रति हैक्टेयर भूमि में मिलावें।

प्रमुख व्याधियां

छाछ्या (पाउडरी मिल्ड्यू)

इस रोग के आक्रमण से पत्तियों पर सफेद चूर्णी धब्बे दिखाई देते है, तथा अधिक रोग ग्रसित पत्तियां पीली पड़कर झड़ जाती है।

रोकथाम के लिये कैराथेन एल.सी. या केलिक्सिन 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के हिसाब से 10 से 15 दिन के अन्तराल से छिड़काव करें।

जड़ गलन :-

इस रोग के प्रकोप से पौधे की जड़ें सड़ जाती हैं।

रोकथाम के लिये कार्बेण्डाजिम 2 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचार कर बुवाई करनी चाहिये।

पीत शिरा मोजेक

इस रोग के प्रकोप से पत्तियां और फल पीले पड़ जाते हैं। पत्तियां चितकबरी होकर प्यालेनुमा शक्ल की हो जाती है, जिसके फलस्वरूप पैदावार में कमी आ जाती है।

इस रोग का संचार सफेद मक्खी नामक कीट से होता है अतः इसके नियन्त्रण हेतु फूल आने से पहले तथा फूल आने के बाद मैलाथियॉन 50 ई.सी. एक मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के हिसाब से छिड़काव करें। आवश्यकतानुसार यह छिड़काव 10 दिन के अन्तराल पर करें।

फलों की तुड़ाई एवं उपज

फलों की तुड़ाई समय पर करना अति आवश्यक है। फलों को यदि अधिक समय तक पौधों पर रहने दिया जाता है तो उनकी कोमलता समाप्त हो जाती है रेशेदार हो जाते हैं एवं स्वाद खराब हो जाता है। गर्मी की फसल से लगभग 50 क्विंटल तथा वर्षा की फसल से लगभग 100 क्विंटल प्रति हैक्टेयर उपज प्राप्त होती है। ■